VOL- IX | ISSUE- IV | APRIL | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

मानसून विषयक वैदिक अवधारणा

डॉ प्रवीण यादव

अन्नं जगतः प्राणः प्रावृट्कालस्य चान्त्रमायत्तम् ।
यस्मादतः परीक्ष्यः प्रावृट्कालः प्रयत्नेन ।।।

जगत् के समस्त प्राणियों को ऊर्जा एवं जीवन देने वाला तत्व अन्न है, वृष्टिकाल ही अनोत्पादन का मूल स्रोत हैं अतः प्रयत्नपूर्वक प्रावृट् काल को ज्ञात करना चाहिये। वृष्टिकाल के संविधिक सप्रामाणिक पूर्वानुमान को 'मानसून' कहते हैं। वैदिक वाङ्मय में, सूर्य-किरणों द्वारा पृथ्वी से जल को वातावरण तक ले जाना तथा कुछ समय पश्चात् उस जल का पुनः वृष्टि के रूप में नीचे आना, अनेकशः वर्णित हैं। अन्तरिक्ष में होने वाली यह संघटना 'यज्ञ' है जिससे पृथ्वी पर जीवन संभव है। छान्दोग्योपनिषद् में इस पंचस्तरीय यज्ञ का विशिष्ट विवेचन है जो सूर्यमण्डल अन्तरिक्ष और पृथ्वी पर घटित होता है। वृष्टि का देवता पर्जन्य है जो कि इन्द्र से सर्वाधिक सम्बद्ध है, जिसका प्रमुख कार्य वर्षा करना है।

ऋवेद में मानसून के कारक देव के रूप में वरूण का नाम सर्वोपरि है। इसी देव ने मेघों में जल का समुद्र भरा, जलों में अग्नि स्थापित की, मेघ को नीचा मुंह करके मुक्त कर दिया जिससे यह पृथ्वी पुष्ट हुयी है।
ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में ॅ५३वें 'अस्य वामस्य'-सूक्त में वृष्टि प्रक्रिया का स्पष्ट चित्रण किया गया है। वृष्टि के मूल में अग्नि तथा उसके विविध रूप महत्त्वपूर्ण हैं। सूर्य रूप से वह द्यु के केन्द्र में, अन्तरिक्ष में वायु के रूप में तथा पृथ्वी पर कनिष्ठ भ्राता के रूप में में अवस्थित है इनके पालक एवं सर्जक द्यु तथा पृथ्वीलोक इनके माता-पिता है *"अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्नः"।*

व्यापक सूर्य रश्मियाँ छः माह तक गर्भ के रूप में धारण करती हैं। धैर्यपूर्वक मन से अपने कर्तव्य की प्रतीक्षा करती है जिससे कि वृष्टि की जा सके। मेघ गर्जन से उत्पन्न वाक् रूपी मेघस्थ जलों का आलोडन करती हुई जल बरसाती है।

ये सूर्य की किरणें दक्षिण में अवस्थित होकर जलों को ग्रहण करती हैं (कृष्ण नियानं) तथा ऊपर अर्थात् उत्तर दिशा की ओर गति करती है तथा ऋत-सदन अर्थात् उत्तरतम स्थान हिमालय की उपत्यका में आकर पवित्र किये गये (घृतेन) जल से पृथ्वी को पूरित कर देती है। यह जल दिन में एक निश्चित सीमा तक ऊपर उठता है और वहीं से पुनः पृथ्वी पर आता है। अग्नि जलों को धुलोक तक ले जाता है तथा पर्जन्य उन्हें वृष्टि के रूप में पुनः पृथ्वी पर लाते हैं।

वैदिक आर्यों ने प्रकृति एवं ब्रह्माण्ड का प्रतिदिन गहन निरीक्षण एवं परीक्षण करके मानूसन अथवा वृष्टि के पूर्वानुमान के सिद्धान्तों की रचना की। उन्होंने आकाश, वायु, तापमान, सूर्य, चन्द्रमा के घेरों का परिवर्तन, पशु, पक्षियों, पौधों, वृक्षों आदि के व्यवहार एवं स्थिति का गहन चिंतन-मनन किया तथा भारी अथवा न्यून वृष्टि के ग्राफिक स्वरूप को स्पष्ट किया।

वायु की वक्र गति से सम्पन्न सूर्य जब मेघ को आलोडित करता है तब परस्पर घर्षण से विद्युत की उत्पत्ति होती है। ये मख्तू ही मेघों को व्याप्त करते हैं जिससे वृष्टि होती है। एक अन्य मन्त्र में मानसून का आलङ्कारिक वर्णन किया गया है कि वृत्र (मेघ) ने जब द्यु तथा पृथ्वीलोक को आच्छादित कर लिया तब सर्वत्र अन्धकार छा गया। सूर्य की किरणें इन्द्र (विद्युत) के जल को मुंह से पीती है और उस जल को बादलों में स्थापित करती हैं। मेघ रूपी किले में विद्युत रूपी इन्द्र वास करता है और इन मेघों का जल बरसाता है। ये वायु तथा इन्द्र ही द्युलोक में उत्तम जल का निर्माण करते हैं और इस भूमि को जल से सींचते हैं। सूर्य की विशिष्ट किरणें अर्थात् अश्विनीकुमार के अश्व नदियों तथा जलाशयों से जल पीतीं है तथा मधुर जल उन किरणों को सींचते हैं। यह

मानसून द्युलोक में प्रादुर्भूत होता है, मंत्र का कथन है कि जो विष्णु अर्थात् सूर्य का स्थान द्युलोक है इसमें जलों का स्थान छिपा हुआ है।

सूर्य-किरणों के कारण ही मेघों की उत्पत्ति होती है। द्यावा पृथ्वी के बीच में चमकने वाला सूर्य, मेघों में छिपे हुए पानी को पीता है। द्वितीय मण्डल में कहा गया है कि वह अपांनपात् देव उन मेघस्थ जलों में गर्भ स्थापित करता है। महान् जल उस देव के लिए जल रूपी अन्न को वहन करता हुआ उसके चारों ओर प्रवाहित होता है। यह सूर्य ही जलों को खींचकर इकट्ठा करता हैं और उनसे पृथ्वी को सींचता है। अग्निदेवता मरुतों के बल में अभिवृद्धि करते हैं जिससे अन्तरिक्ष में जलपूरित हो सके। प्रातः कालीन सूर्य का अभिधान सविता है, वह कृष्ण मार्ग का अवलम्बन लेकर अन्तरिक्ष में गमन करते हैं।

सूर्य ही पृथ्वी से शुद्ध जल का पान करता है। ये जल सूर्यमण्डल में गुम्फित रहते है आह्लादक और जलमिश्रित सोम द्युलोक में दौड़कर जाता है। आहूत सोम आकाश में जाकर रसवाही मेघ बनकर संचरण करता है। यह जल साढ़े छः माह तक (लगभग ॅ८४ दिन तक) सूर्य मण्डल में गर्भरूप में प्रतिष्ठित रहता है। उसके बाद वह धर्मीभूत होकर प्रकट होता है। यही 'मानसून' कहलाता है। मानसून विषयक वैदिक अवधारणा में सूर्य, वरुण, इन्द्र आदि देवताओं, मण्डूकादि पार्थिव जीवों तथा अन्तरिक्षस्थ क्रिया-कलापों-यज्ञादि में परस्पर समन्वय स्थापित करते हुए 'मानसून' का पूर्वानुमान किया गया है। न्यून या अति मानसून का उपचार भौतिक यज्ञों के सफल आयोजन से संभव है। इसीलिए वैदिक साहित्य में वृष्टि यज्ञों का निदर्शन किया गया है।

संदर्भ :-

१ वृहत्संहिता २१.१
२ ऋऋग्वेद ५.८३.१
३ ऋग्वेद ८६.१७-२१
४ ऋग्वेद ४५.७५
५ ऋग्वेद ४.४३.६
६ ऋग्वेद ५.३३
७ ऋग्वेद ४.५.६.१०
८ ऋग्वेद ५४७३
९ ऋग्वेद १.१६.८